© आईसीसी

क्रिकेट बनाम बेसबाल

अदनान ए. सिद्दीकी

नामीबिया के ईवाल्ड स्टीनकैंप अमेरिका के रोमेनो डीन को रन आउट करते हुए। यह दृश्य श्रीलंका में फरवरी में 19 वर्ष से कम उम्र के खिलाड़ियों की आईसीसी विश्व कप क्रिकेट प्रतियोगिता का है।

अप्रैल का गर्म दिन था और धूप बिखरी हुई थी। लेकिन यह सिनसिनाटी का ओपनिंग डे या फोर्ट लॉडरडेल की स्प्रिंग ट्रेनिंग नहीं थी। नई दिल्ली के फिरोजशाह कोटला स्टेडियम में करीब 15 हजार कट्टर भारतीय क्रिकेट प्रेमियों के बीच संभवत: मैं अकेला अमेरिकी था- धूल भरे सेक्शन ई में ठुंसा हुआ। मैंने जम कर मूंगफलियों का मजा लिया और वहां घुलने-मिलने की कोशिश की। हालांकि मैंने 1981 के बाद से कोई पेशेवर क्रिकेट मैच नहीं देखा था और मुझे यह पक्का पता नहीं था कि 'सिली मिड-ऑन' कोई फील्ड पोजीशन थी या फिर खिलाड़ी का कोई अंत:वस्त्र। मैंने सोचा कि किसी से न पूछना ही बेहतर होगा। अचानक पाकिस्तान का एक विकेट जल्दी गिरने पर कोटला में एक गर्जना हुई और फिर उतने ही नाटकीय ढंग से 'आ-लू, आ-लू' की आवाजें शुरू हो गईं। आलू? ऐसे वक्त खाने की किसी चीज के बारे में कौन सोच सकता है? ओह, मैं समझा, पाकिस्तान के मोटे, भारी भरकम कप्तान बल्लेबाजी के लिए आ रहे थे। उनकी चाल-ढाल और गरिमा ने मुझे अमेरिका के बेसबॉल महानायक और होम रन के महारथी बेब रूथ के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया।

मेरा मन तीन दशक पीछे 1975 में कोटला की तरह ही एक शोर-शराबे वाले एक किले में पहुंच गया, वह न्यूयॉर्क का मशहूर यांकी स्टेडियम -जिसे रुथ ने तैयार कराया- था और वहां नारे 'आ-लू' के नहीं बल्कि 'लोउ-लोउ' के गूंज रहे थे। मैं स्थानीय चहेते खिलाड़ी लोउ पिनीला को अक्सर अपनी टीम के लिए महत्वपूर्ण क्षणों में बैट करने के लिए आते देखा करता था। न्यूयॉर्क की महानगरीय टीम का प्रशंसक होने के नाते मैंने छोटे शहरों की टीमों पर कभी गौर नहीं किया। पिनीला की मेजर लीग में उनके अनिश्चित मिजाज और अपने पक्ष में फैसला न होने पर किक से अंपायर की तरफ धूल फेंकने की प्रवृत्ति के लिए उनकी खास तौर पर निंदा होती थी। इसके बावजूद लोउ निश्चत रूप से एक प्रमुख हिटर (कई तरह से) थे और इस मौके पर उन्होंने सेंटर की तरफ हिट किया लेकिन वह निशाने से बहुत दूर रहा। मैंने खड़े हो कर 'बू' किया पर मेरी बू की अवाज 'लोउ' की तरह लगी और इसलिए (भगवान का शुक्र है) मेरे आसपास के किसी भी उन्मादी प्रशंसक ने उस पर ध्यान नहीं दिया।

क्रिकेट और बेसबॉल, दोनों पर बराबर आसक्त होने वाले लोग मिलना मुश्किल हैं, क्योंकि दोनों खेलों का इतिहास अलग-अलग है, नियम भी अलग हैं और (हम प्रशंसकों के स्तर पर) वे बहुत अलग-अलग मानवीय संवेदनाओं को प्रभावित करते हैं। माना कि दोनों खेलों का मूल लक्ष्य समान है (सबसे

ज्यादा स्कोर करना) और तौरतरीके भी एक जैसे हैं (प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ियों के ऊपर से, उनके पैरों के बीच से और जहां वे नहीं हैं, वहां से गेंद हिट करना)। और कोई भी देख सकता है कि 400 फुट के होम रन से उपजा जोश वैसा ही हो सकता है जितना कि एक गगनचुंबी छक्के के बाद। लेकिन यह भी स्वीकार करना होगा कि ज्यादातर अंतर्मुखी अमेरिकियों के लिए क्रिकेट उस छोटे, अदृश्य काले कीड़े की तरह है जिसकी आवाज हम रात में अपने घर के पिछवाड़े में टिक्के और हैम्बर्गर सेंकते समय सुनते हैं। भारतीय कम से कम यह तो जानते हैं कि बेसबॉल एक खेल है, कोई कीड़ा नहीं। लेकिन वे इसे भद्र पुरुषों के मूल खेल का एक आदिम रूप (पढ़ें बिगड़ा हुआ रूप) मान कर नकार देते हैं। एक दिल्लीवासी ने एक बार कहा था कि एबनेर डबलडे जब गुगली नहीं फेंक पाए तो इसे गढ़ दिया। और वह काली दिखने वाली चीज क्या है जो आप अमेरिकी टीवी कैमरे पर क्लोज अप के समय थूकते रहते हो? दक्षिण एशियाई पत्नियां हमेशा यह जानने को उत्सुक रहती हैं कि वह तंबाकू है, सुपारी है या फिर पान। सांस्कृतिक अंतर अंतहीन हैं, लेकिन मैं हूं कि दोनों खेलों को पसंद करता हूं। चाहे इसे एनआरआई होने से पैदा हुआ स्किजोफ्रेनिया कहें। चाहे इसे पीनट्स, पॉपकॉर्न और क्रैकर जैक्स की भूख कहें। चाहे इसे बहु-संस्कृतिवाद और दूसरे के प्रति आकर्षण कहें। या फिर इसे सिर्फ बैटर को कीमती रनों से वंचित करने के लिए ताजा कटी घास पर छलांग लगाते तेज-तर्रार, सुंदर एथलीटों को देखते

एरिक रिस्सो © ए.पी. - डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

द सैन डिएगो पैड्रेस के डेव राबर्ट्स रन आउट से बचने के लिए छलांग लगाकर फर्स्ट बेस में पहुंच गए। इस दौरान गेंद सैन फ्रांसिस्को ज्यांट्स के लांस निक्रो के पास से जाती हुई। सैन फ्रांसिस्को का यह दृश्य सितंबर 2005 का है।

फ्लोरिडा का क्रिकेट प्रेमी कस्बा

लॉडरहिल अमेरिका के शहरों में अनूठा है। यहां रहने वालों की इच्छाओं के मद्देनजर शहर के अधिकारियों ने दक्षिण फ्लोरिडा की ब्रेवार्ड काउंटी के नए क्षेत्रीय स्पोर्ट्स पार्क में अत्याधुनिक स्टेडियम बनवाने के लिए पार्क्स बांड की कुछ रकम का इस्तेमाल किया। लॉडरहिल को उम्मीद थी कि स्टेडियम वर्ष 2007 तक तैयार हो जाएगा और उसे वर्ल्ड कप आयोजित करने के लिए चुन लिया जाएगा। हालांकि ऐसा नहीं हो पाया, फिर भी क्रिकेट के प्रति दीवानगी बढ़ रही है। स्थानीय लॉडरहिल स्पोर्ट्स पार्क में 20 ओवर के रात्रिकालीन मैच होते हैं जिनके लिए कोई पैसा नहीं देना होता। यहां चौथा मेयर्स इंटरनेशनल कप हाल ही में खत्म हुआ है और जल्द ही भहमास और श्रीलंका की टीमों के आने की उम्मीद है। मेयर्स कप के बारे में लॉडरहिल के जनसंपर्क प्रबंधक लेस्ली ट्रोपेपे कहते हैं, ''भारत और जमैका के बीच खेला गया इस साल का सेमीफाइनल मैच अंतिम गेंद तक दिल की धड़कनें रोक देने वाला था।''

साढ़े तीन महीने तक चली इस प्रतियोगिता की दो भारतीय टीमों के कप्तानों में से एक मनदीप ढिल्लो ने सबसे ज्यादा रन बनाए और सर्वाधिक विकेट भी चटखाए। मैच देखने का कोई शुल्क नहीं लिया जाता क्योंकि शहर क्रिकेट को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहा है। सिटी स्पोर्ट्स पार्क में एक मैच के दौरान फुटबाल और नेटबाल टीमों की भी टक्कर हो रही थी। ट्रोपेपे कहती हैं, ''दर्शक तीनों ही खेलों का आनंद ले सकते हैं, वे संगीत सुन सकते हैं, खेल के हर क्षण की कमेंट्री सुन सकते हैं और इस सबका मजा पसंदीदा मछली या मुर्गा खाते हुए लिया जा सकता है। अमेरिका में ऐसी बात और किसी चीज में नहीं।''

वह कहती हैं, ''दक्षिण फ्लोरिडा विभिन्न समुदायों का संगम स्थल है। आप खाने-पीने, संगीत, खेल आदि में उन सभी बढ़िया चीजों से रूबरू हो सकते हैं जो सभी संस्कृतियों में आनंददायक हैं। यहां सॉफ्टबाल, फुटबाल के मैदानों और अन्य खुली जगहों पर सालों से क्रिकेट खेली जा रही है। अमेरिका की वर्ष 2000 की जनगणना के मुताबिक लॉडरहिल के

साभार: द जॉस कंस्ट्रक्शन कंपनी, लॉडरहिल

लॉडरहिल के क्रिकेट स्टेडियम का विहंगम दृश्य।

70,000 निवासियों में से लगभग एक-चौथाई वेस्टइंडीज में जन्मे। यहां 23 वर्ग किलोमीटर के इलाके में लगभग 40 भाषाएं बोली जाती हैं। कई सालों से क्रिकेट खेल रहे मेयर रिचर्ड जे. कैपलान बल्लेबाज हैं और उन्होंने शहर के कमिश्नरों के साथ मिलकर मेयर्स कप शुरू कराया। 10 टीमें फ्लोरिडा की दो लीगों की सदस्य हैं। दोनों लीग अमेरिकी क्रिकेट संघ से संबद्ध हैं।

ट्रोपेपे कहती हैं, ''खिलाड़ी प्रतियोगिता में विरासत या जन्म वाले देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए गर्व के साथ खेलते हैं। प्रतियोगिता में कड़ी प्रतिस्पर्धा होती है।'' **–एलकेएल**

दक्षिण भारत में बेसबाल

क्रिस्टोफर वर्स्त

साभार: नाजिम फरीद

दाएं: नाजिम फरीद (बाएं से दूसरे) ईगल स्टार्स बेसबाल टीम के साथ

नीचे: वाईएमसीए प्रतियोगिता में विजयी टीम को ट्राफी प्रदान करते हुए क्रिस्टोफर वर्स्त (बीच में)

चेन्नई में वाई. एम. सी. ए. शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय के पहले वार्षिक बेसबाल टूर्नामेंट के लिए एकत्र छात्रों और वीआईपी लोगों के लिए यह अचरजपूर्ण दृश्य रहा होगा। मुख्य अतिथि (मैं) मंच पर छाया में नहीं बैठा था, बल्कि खिलाड़ियों की पोशाक पहने था और दूसरे साल की शारीरिक शिक्षा मास्टर्स टीम के साथ थोड़ी देर के लिए घुलमिल रहा था। इससे प्रोटोकॉल और बैटिंग ऑर्डर के कुछ मुद्दे वाकई हवा हो गए। मैदान के अंदर खड़े होकर मैंने वही उत्साह और आनंद महसूस किया जो मैं युवावस्था के दौरान बेसबाल खेलकर महसूस करता था। यह जानकर खुशी होती है कि दक्षिण भारत में ज्यादा से ज्यादा लोग इस अहसास का अनुभव करने का मौका हासिल कर रहे हैं।

तमिलनाडु में आप जब भी बेसबाल से रूबरू होंगे तो आपका सामना नाजिम फरीद से जरूर होगा। वह बेसबाल के बड़े प्रेमी हैं और तमिलनाडु बेसबाल एसोसिएशन और चेन्नई जिला बेसबाल एसोसिएशन के सचिव हैं। वह बेसबाल टूर्नामेंट आयोजित करने, खेल की मूल बातें बताने और बेसबाल के प्रति प्रेम जगाने के लिए राज्य भर में घूमते रहते हैं। फरीद कहते हैं, ''यहां मौजूद अन्य युवाओं की तरह मैं भी क्रिकेट प्रशंसक के रूप में पला-बढ़ा। लेकिन मैंने बेसबाल को अपना लिया क्योंकि यह ज्यादा तेज खेल है और दो घंटे में आपको नतीजा मिल जाता है।''

दक्षिण भारत में बेसबाल के दूत होने के साथ ही फरीद ईगल स्टार बेसबाल टीम का प्रबंधन भी देखते हैं। यह क्लब पूरे दक्षिण भारत में प्रतियोगिताओं में भाग लेता है। ईगल स्टार में फरीद के तीनों बेटे शामिल हैं और हाल ही में इस क्लब ने कर्नाटक की एक बेसबाल टीम की मेजबानी की। ईगल स्टार की पहल के चलते ही चेन्नई के वाई.एम.सी.ए. शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय में बेसबाल की शुरुआत हुई। यह भारत में शारीरिक शिक्षा से जुड़ा पहला कॉलेज है। इसे लीवरपूल, पेंसिल्वेनिया के प्रतिबद्ध बेसबाल प्रेमी हैरी क्रो बक ने वर्ष 1920 में स्थापित किया।

फरीद और उनका ईगल स्टार क्लब चेन्नई में कमजोर पृष्ठभूमि के छात्रों को बेसबाल सिखाने में काफी समय बिताते हैं। इनमें शहर के मदरसे विशेष रूप से शामिल हैं। इसके कारण कई स्थानीय स्कूलों में बेसबाल की शुरुआत हो गई है। चेन्नई के अंजुमन-ए-हिमायत-ए-इस्लाम में ईगल स्टार ने प्रशिक्षण देने का काम इतने बढ़िया तरीके से किया है कि वे किसी भी टीम पर भारी पड़ते हैं। अंजुमन के कई खिलाड़ी भारत की राष्ट्रीय टीम के लिए चुने गए हैं।

टी.जी. वेंकटेश

दूसरे और तीसरे बेस के नीचे खड़े होकर 20 साल से मेरे साथ रहे दस्तानों को आजमाते हुए मेरा ध्यान इस बात पर गया कि किस तरह इन युवाओं ने एक नए खेल को सहजता के साथ अपना लिया। ये लोग खेल का पूरा मजा ले रहे थे। जब नियमों को लेकर थोड़ा-बहुत टकराव हुआ तो दोनों टीमों ने सहमति तक पहुंचने में एक-दूसरे की मदद की। और जब खेल खत्म हुआ तो दोनों टीमों के खिलाड़ियों के अंदाज देखकर ऐसा लग रहा था मानो कह रहे हों- चलो फिर से खेलते हैं। □

लेखक: *क्रिस्टोफर वर्स्त अमेरिकी दूतावास के चेन्नई कांसुलेट में पब्लिक अफेयर्स के वाइस-काउंसल हैं।*

हुए नृत्य और नजारे के प्रति प्यार कहें।

मेरे अमेरिकी मित्र क्रिकेट के प्रति मेरे आकर्षण का अक्सर मजाक उड़ाते हैं। पांच दिन का मैच? बिल्कुल नहीं। हम अमेरिकी तत्काल संतुष्टि चाहते हैं, तीन घंटे या उससे कम, और सुनिश्चित करें कि आप हमें परिणाम और एक विजेता दें, क्योंकि ड्रॉ अभिशाप हैं, समय की बड़ी बर्बादी। लंच के लिए विश्राम और फिर चाय के लिए विश्राम? 10 मिनट का 'सेवंथ इनिंग स्ट्रैच' ही पर्याप्त है, एक हॉट डॉग खाने या एक ऑटोग्राफ लेने के लिए इतना वक्त ही काफी है। और यह बैटिंग 'भागीदारियों' और दो पारियों का मामला क्या है? हम एक बार में अपने एक हीरो के लिए ही तालियां बजना चाहते हैं, और हम उन्हें एक गेम में चार-पांच बार बैट करते देखना चाहते हैं, ताकि उन्हें वैयक्तिक रूप से चमकने के ज्यादा अवसर मिलें- हम अमेरिकी जीवन में तीसरे और चौथे अवसरों में विश्वास करते हैं, बेसबॉल की ही तरह।

जब मैं बेसबॉल का जिक्र करता हूं तो मेरे भारतीय मित्रों की आखें फैल जाती हैं। वे हैरान होते हैं कि हमारे खिलाड़ी एक गेम में 300 से ज्यादा गेंदों से खेलते हैं क्योंकि अंपायर प्रशंसकों को फाउल गेंदों को स्मृति चिन्ह के रूप में रखने की इजाजत देते हैं, पैसे की बड़ी बर्बादी। वे स्तंभित हो जाते हैं, जब वे बेसबॉल खिलाड़ियों को अंपायर की गर्दन से दो इंच की दूरी पर चीखते-चिल्लाते देखते हैं (भद्र क्रिकेटर फैसलों को चुपचाप स्वीकार कर लेते हैं और सफेद कपड़ों में सर्वशक्तिमान व्यक्ति का हमेशा सम्मान करते हैं; गलत फैसले किस्मत/ कर्म हैं और अंततः दीर्घकाल में सब बराबर हो जाएगा, इसलिए इसके बारे में बहस करने की कोई तुक नहीं है)।

सच कहा जाए तो दोनों खेल एक सुस्त, आरामदेह रफ्तार पर फलते-फूलते हैं जिसमें रोमांच के अप्रत्याशित झोंके आते हैं, आपकी 9 से 5 की डेस्क की नौकरी की तरह (जिसमें रोमांच का झोंका आपका दैनिक लंच ब्रेक और बड़े बॉस के साथ मीटिंग होता है)। कौन जीतता है और कौन हारता है, इसका फैसला अक्सर 'वातावरण'- भीड़ के शोर के स्तर, हवा की गति और दिशा, सूरज की चमक और घास की नमी के स्तर से तय होता है। दोनों खेलों में मस्तिष्क की ताकत, रणनीति और याददाश्त की जरूरत होती है। जब तक आप मैदान पर हर खिलाड़ी के हर कदम को नहीं समझ सकते या उसका पुर्वानुमान नहीं लगा सकते, तब तक आप सच्चे प्रशंसक या काबिल प्रशिक्षक नहीं हैं। बेसबॉल खिलाड़ी (और उनके प्रशिक्षक, स्काउट, एजेंट, मैनेजर और जनरल मैनेजर) हर मामूली बढ़त के लिए खुद अपने और विपक्ष के वीडियो देखना पसंद करते हैं। किसी खास पिचर की कमजोरी ढूंढ़ने के लिए न केवल उसके पिकअप मूव का फ्रेम दर फ्रेम विश्लेषण किया जाता है बल्कि सच्चे भक्त इसका अध्ययन भी करते हैं कि वह कितनी बार बिदकता है, जब वह पहले बेस की तरफ थ्रो ब्रेक करता है तो पिच काउंट क्या है, शायद यह भी कि वह गेम वाले दिन नाश्ते में क्या खाता है। क्रिकेट कप्तान भी इतने ही विश्लेषणात्मक और अंधविश्वासी होते हैं। वे विकेट पर सैकड़ों सूक्ष्म दरारों और घास के तिनकों के अध्ययन के लिए मैदान पर सुबह जल्दी पहुंच जाते हैं। दोनों खेलों पर उनके देशों को गर्व है, क्योंकि दोनों ही आम आदमी (और महिला) के स्तर पर लोकतांत्रिक और बहुलतावादी है। अमेरिका में सार्वजनिक 'सैंडलॉट्स' या भारत में मैदानों पर उम्र, लिंग, कौशल और आय स्तर से कोई फर्क नहीं पड़ता- 'गेंद खेलो' या 'यार बॉलिंग करो' चिल्लाइए और लोग तुरंत इकट्ठे हो जाते हैं।

चार्ल्स ध्रुवाक © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश मार्च में पाकिस्तान में अपनी यात्रा के दौरान क्रिकेट खेलते हुए। राष्ट्रपति बुश कभी टेक्सास रेंजर्स बेसबाल टीम के स्वामी हुआ करते थे। अमेरिका के संस्थापकों में से बहुत-से क्रिकेट खेलते थे। अमेरिका के पहले राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन क्रिकेट के शौकीन थे। अमेरिका में पहला अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच 1844 में कनाडा की टीम के खिलाफ ब्लूमिंगडेल पार्क, न्यूयॉर्क सिटी में हुआ। इसमें कनाडा की टीम 23 रन से विजयी रही। बीसवीं सदी के शुरू से ही बेसबाल की लोकप्रियता बढ़ती गई और क्रिकेट पृष्ठभूमि में चला गया। 1970 के दशक में आप्रवासियों के प्रभाव में फिर क्रिकेट की लोकप्रियता बढ़ने लगी। अब अमेरिका के सभी 50 राज्यों में क्रिकेट खेला जाता है।

मेरा दिवा स्वप्न टूटता है। 'आलू' इंजमाम चौका लगाते हैं, कोटला में दर्शक मायूस हो उठते हैं, अब पाकिस्तानी खिलाड़ी पर छींटाकशी करने से कोई लाभ नहीं, वह लय में हैं। कुछ मिनट बाद वह सीधे एक फील्डर की तरफ गेंद मारते हैं और एक महत्वाकांक्षी रन के लिए दौड़ पड़ते हैं। विकेट गिर जाते हैं, रिप्ले दिखाते हैं कि आलू एक मील (या फिर एक किलोमीटर) की दूरी से आउट है लेकिन अंपायर की तरफ से कोई संकेत नहीं। भारतीय टीम खेल जारी रखती है, विरोध के एक भी शब्द के बगैर, एक भौंह उठी हुई नहीं, न आसमान की तरफ उठी कोई चिड़चिड़ी निगाह। नहीं, वह सब नहीं चलेगा। अगर उन्होंने ऐसा किया तो वह क्रिकेट नहीं होगा। मैं मन ही मन हंसते हुए कोच ग्रेग चैपल की सफेद कोट पहने व्यक्ति को झाड़ पिलाने का दृश्य सामने लाता हूं। हर कोई जानता है कि वह पिनीला (अब बेसबॉल मैनेजर) और अटलांटिक तथा प्रशांत के उस पार उनके जैसे अन्य लोगों द्वारा अंपायरों को आदतन पूर्ण 'धूल स्नान' कराने के नहीं तो इसके तो हकदार हैं। अपशब्द इस्तेमाल करने पर बेसबॉल खिलाड़ियों, मैनेजरों और प्रशिक्षकों का कई मैचों का निलंबन होते देखना या प्रशंसकों और मीडिया से माफी मांगते देखना भी आनंद देता है।

क्रिकेट में ऐसा दुर्लभ मौकों पर ही होता है जब कोई खिलाड़ी एंपायर के फैसले को स्वीकार न करे। मैं कोई मनोवैज्ञानिक नहीं हूं, लेकिन लोग कहते हैं कि कभी-कभार अपने दायरे से बाहर होना अच्छा उपचार है। अनजाने रास्ते पर चलें, कुछ अलग करें। मैं क्रिकेट दर्शकों में से किसी को सात घंटे धूप में बैठे रहने के बाद पकड़े 'छक्के' या 'चौके' को वापस करने से इनकार करते देखना पसंद करूंगा- जब उसे हथकड़ियों में या (लगान की स्टाइल में) खुशी में बेसुध, नई शक्ति पाए क्रिकेट खिलाड़ियों, प्रशंसकों और मूंगफली बेचने वालों के कंधों पर ले जाया जाए तो वह कहे, ''नहीं, यह मेरा है।'' □

लेखकः *अदनान ए. सिद्दीकी नई दिल्ली में अमेरिकी दूतावास में सांस्कृतिक मामलों के काउंसलर हैं।*